

बदले की भावना से बचें

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रतिशोध की भावना मनुष्य के अन्दर आग की ज्वाला के समान धधकती रहती है। यह व्यक्ति को नुकसान पहुँचाती है। किसी ने हमारा नुकसान कर दिया तो हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम उसमें ऐसा परिवर्तन लायें जिससे उसका हृदय परिवर्तित हो जाये। क्रोध सामने क्रोध को देखकर बढ़ता ही है घटता नहीं। व्यक्ति के अन्दर नकारात्मक विचार और आन्तरिक रसायन प्रतिशोध से परिवर्तित हो जाती है। किसी के साथ वह घुल-मिल नहीं सकता। महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि आपके गाल पर कोई एक चांटा मारे तो दूसरा भी गाल उसके सामने कर दीजिये। वह स्वयं अपनी गलती पर पश्चाताप करेगा और गलती को सुधारने का प्रयास करेगा। गलत कार्य को समाज में कभी भी प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। आज समाज में जो वर्ग भेद की भावना बढ़ रही है वह प्रतिकार की भावना से बढ़ रही है। इस प्रवृत्ति को अगर रोका न गया तो यह देश के लिए घातक होगी। मनुष्य को आत्मनियन्त्रण करना चाहिए। क्षमा ही वीरों का भूषण होता है। क्षमा कायर व्यक्ति नहीं दे सकता। प्रतिशोध की भावना के कारण ही परिवारों में फूट पड़ रही है और परिवारों का विघटन भी हो रहा है। सहनशीलता कम हो रही है। थोड़े से वाद-विवाद पर लोग हत्या पर उतारू हो जाते हैं। इसका क्या कारण है? इसका कारण है सहनशीलता का अभाव। धीरे-धीरे परिवर्तन या पाश्चात्य अनुकरण की प्रवृत्ति ने कुप्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया है। भारतीय संस्कृति जियो और जीने दो की भावना पर अवलम्बित है। इस संस्कृति में प्रतिशोध की भावना को नहीं बल्कि परोपकार की भावना को बढ़ावा दिया है। हमारे देश में गरीबों और अमीरों के बीच में जो दूरी बढ़ रही है वह भी घातक है। परोपकार की प्रवृत्ति बढ़नी चाहिए। जगत कल्याण में मानव को समय लगाना चाहिए।

देश का वातावरण जो बिगड़ रहा है वह सुधरना चाहिए। वातावरण में गिरावट बीस तीस वर्षों में अधिक हुई है। शिष्टाचार को सदाचार को बढ़ावा देना चाहिए। दूसरों को सहें सम्मान दे, बड़ों का सत्कार करें, यह भारतीय जीवन पद्धति रही है। आज सभी प्रकार के सम्बन्धों के

बन्धन ढीले पड़ रहे हैं। इस कुप्रवृत्ति को रोका जाना चाहिए। प्रतिकार को सहनशीलता के द्वारा जीतने का प्रयास करना चाहिए। सहनशीलता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव गढ़ सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। किसी व्यक्ति को किसी बुराई का परित्याग करने को कहा जाता है तो अक्सर उत्तर मिलता है कि क्या करूं? मैं मानता हूँ कि यह कार्य गलत है, किंतु मेरी आदत पड़ गई है, आदत छूटना बड़ा कठिन है। कई तो यहां तक कह देते हैं कि मैंने इस आदत को त्यागने का खूब प्रयास किया, किन्तु मैं इसे छोड़ नहीं सका। चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है व्यक्ति अपनी आत्म-शक्ति को पहचाने। अपने आप में एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है, इस ध्रुव सत्य को आत्मसात करना चाहिए।

सहनशीलता जीवन के प्रति समस्त दृष्टिकोण को बदल देती है। एक जगह जन्म लेने और पलने वाले व्यक्तियों में भी बड़ा भारी अंतर पाया जाता है। एक शेर की तरह जीता है और दूसरा गीदड़ की तरह दबा-दबा रहता है। आखिर यह अंतर क्यों? विभिन्न जीवन धाराओं का गहराई तक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि विभिन्न जीवन प्रक्रियाओं की मौलिक असमानता का कारण क्षेत्र, वातावरण, खान, पान, पहनावा मूल नहीं होकर मौलिक कारण आत्म-शक्ति का प्रकाट्य संबंधी अंतर है। सत्य और न्याय आत्म स्वीकृत तत्व हैं और उसके प्रत्येक स्फुरण में वे ही जगमगाते हैं। वह एक सिंह है, सूर्य है। अंधकार और अनुचित के लिए वहां कोई अवकाश नहीं। जिधर निकलता है एक नई लहर, एक नया तेज स्फुरित हो जाता है। वह भी एक जीवन होता है किन्तु जगमगाता हुआ। मानव जीवन समता और सहिष्णुता का जीवन है। भौतिक सुख-दुःख का मानव-जीवन में कोई स्थान नहीं। उसकी सम्पूर्ण चर्या आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होती है। जिसने संयम के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है। संयम के कठोर मार्ग पर चलने वाले साधक के जीवन में परीषहों का आना स्वाभाविक है, क्योंकि साधक का जीवन चरित्र की मर्यादाओं से बंधा है। मर्यादाओं के पालन से मानव जीवन की सुरक्षा होती

है। मर्यादाओं का पालन करते समय संयममार्ग से च्युत करने वाले कष्ट एवं संकट ही मानव की कसौटी हैं, इसलिये उन कष्टों को समभाव से सहन कर वह अपने आचार का पालन करे। साधक के लिये परीषह बाधक नहीं साधक होते हैं। मानव में जीवन यापन के दो प्रमुख आयाम होने चाहिए— अहिंसा और कष्ट सहिष्णुता। कष्ट सहने का अर्थ शरीर, इन्द्रिय और मन को पीड़ित करना नहीं, किन्तु अहिंसा आदि धर्मों की आराधना को सुस्थिर बनाये रखना है। मानव जीवन में अनेक बाधायें, प्रतिकूलतायें तथा उपसर्गादि आते ही रहते हैं, इन्हें समतापूर्वक सहन करना चाहिए। प्रतिशोध की भावना से आत्मा को मलीन नहीं करना चाहिए। हिंसात्मक प्रवृत्ति को अहिंसात्मक भावना से जीतना चाहिए।